अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

केरल की घाटियों में गतिमान हुए महातपस्वी महाश्रमण

-आरोह-अवरोह व घुमावदार पहाड़ी रास्तों से आगे बढ़ रही अहिंसा यात्रा

-पहाड़ों से लेकर मार्ग तक वृक्षराशियों भरे हुए, किन्तु आतप का जारी है कहर

-लगभग दस किलोमीटर कर आचार्यश्री पहुंचे पट्टिक्कड स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल

-भीतर के दस शत्रुओं को परास्त कर बनें आत्मजयी: आचार्यश्री महाश्रमण

24.02.2019 पट्टिक्कड, त्रिशूर (केरल): लगभग 42 नदियों, पहाड़ों और अरब सागर के किनारे अवस्थित केरल को प्राकृतिक संपदाओं से सम्पन्नता के लिए 'ईश्वर का घर' कहा जाता है। जहां वर्तमान में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के मंगल उद्देश्यों के साथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ निरंतर गतिमान हैं।

रविवार को प्रातः महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पहाड़ की बिल्कुल तलहटी में अवस्थित मैरी माथा हायर सेकेण्ड्री स्कूल से प्रातः की मंगल बेला में प्रस्थान किया। इस स्कूल के लगभग दो तरफ रबर के वृक्षों की कतारें लगी हुई थीं तो एक ओर से राजमार्ग गुजर रहा था तो वहीं एक ओर नारियल और केले के वृक्ष अवस्थिति लिए हुए थे। ऐसे प्राकृतिक मनोरम दृश्यों के बीच से गुजरती आचार्यश्री महाश्रमणजी की धवल सेना मानों किसी निर्मल झरने के जल की तरह झरती हुई नजर आ रही थी। सुबह के वातावरण में हल्की ठंड भी थी, किन्तु कुछ ही समय में सूर्य के आतप से सब कुछ मानों समाप्त कर दिया और चारों ओर छा गया गर्मी और गर्म का हवा का प्रभाव। आज का विहार मार्ग भी काफी घुमावदार व आरोह-अवरोहयुक्त था। मार्ग के एक ओर ऊंचे पहाड़ थे तो दूसरी ओर गहरी खाई, किन्तु दोनों ओर समानता थी तो वह थी वृक्षराशियों की। विहार के दौरान आचार्यश्री पलाक्कड जिले की सीमा को पार कर त्रिशूर जिले की सीमा में पावन प्रवेश किया। लगभग दस किलोमीटर से अधिक की यात्रा कर आचार्यश्री पट्टिक्कड स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे।

स्कूल परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि दुनिया में शत्रु भी होते हैं और मित्र भी होते हैं। शत्रु बाहरी भी हो सकते हैं और शत्रु भीतरी भी होते हैं। आदमी के भीतर रहने वाले दस शत्रुओं में एक बिना जीती हुई आत्मा, चार कषाय और पांच इन्द्रियां हैं, जो आदमी की शत्रु होती हैं। जो मनुष्य इन दस शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है, वह दुनिया को भी जीत सकता है। आदमी को साधना के द्वारा कषाय रूपी शत्रुओं को जीतने का प्रयास करना चाहिए। इन को यदि एक साथ न जीता जा सके तो अभ्यास, और साधना के द्वारा आदमी एक-एक को धीरे-धीरे जीतने का प्रयास करना और चाहिए और उन्हें पूर्णतया समाप्त करने का भी प्रयास करना चाहिए। इसके लिए आदमी को अथवा साधु को मनोबल रखने की आवश्यकता होती है। साधु हो या गृहस्थ परिषहों और प्रतिकूलताओं को भी सहन करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने लोगों को भीतर के शत्रुओं को जीतने की प्रेरणा दी।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में शासनश्री मुनिश्री राजकरणजी की स्मृति सभा का भी आयोजन हुआ। सर्वप्रथम आचार्यश्री ने उनका संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी आत्मा के प्रति मध्यस्थ भावना व्यक्त करते हुए आत्मा के शांति के लिए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया। इसके उपरान्त साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने उनके आत्मा के आध्यात्मिक विकास की भावना व्यक्त की। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी के अलावा मुनि चैतन्यकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि कोमलकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि ध्रुवकुमारजी तथा साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। स्कूल की हेडमास्टर श्रीमती जोसफीना जोसेफ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी तो आचार्यश्री ने उन्हें और उनके स्कूल में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की स्थापना की पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्हें मंगल आशीष भी प्रदान किया।